SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वर्तमान परिप्रेक्ष में दलित साहित्य की चेतना

बृजलाली पटेल, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
उमेश प्रसाद, शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
बृजलाली पटेल, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
उमेश प्रसाद, शोधार्थी,
हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 17/08/2021
Plagiarism : 00% on 11/08/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Wednesday, August 11, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1746 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

orZeku ifjçs{k esa nfyr lkfgR; dh psruk funsZ'kd 'kks/kkFkhZ foHkkxk/;{k mes'k çlkn M,- c`tykyh iVsy nfyr lkfgR; esa 'kks"k.k pkgs ekufld gks ;k lkekftd] vkfFkZd gks ;k /kkfeZd mlds fo#) foæksg gksxk gh pkgs mlesa le; fdruk Hkh yxs tSls Hkkjr esa 'krkfCn;k¡ chr xbZ A /keZ ds uke ij ,d oxZ dks lkekftd] ekufld vkSj vkfFkZd 'kks"k.k

lgrs gq, ysfdu tSls gh bl nfyr oxZ esa tjk lh psruk vkbZ muds çfr foæksg dk foLQksV gqvkA nfyr lkfgR; nfyr ys[kdksa }kjk fyf[kr og lkfgR; gS tks lkekftd]/kkfeZd] vkfFkZd vkSj

शोध सार

दलित साहित्य में दलित समाज के वर्तमान परिप्रेक्ष में दलित साहित्य की चेतना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य में सामाजिक स्थिति में आर्थिक स्थितियों के द्वारा श्रम, मजदूरी करना कम मूल्य पर अधिक समय तक मजदूरी करवाना सामाजिक उत्पीड़न, शोषण का याथार्थ चित्रण किया गया है। डॉ. अम्बेडकर का जीवन और कार्य बहिष्कृतों के हित के लिए व्यतीत हुआ है। उन्होनें धर्म, अर्थ, साहित्य, राजनीति, समाजनीति, कानून और अस्पृश्यों के हितों के संदर्भ में विचार किया गया है। लेखक ने दलित के पीड़ा, शोषण, अत्याचार, पाखण्डवाद, अंधविश्वास, जाति भेदभाव आदि की समस्या को उजागर किया है।

मुख्य शब्द

सामाजिक व्यवस्था, दलित आंदोलन, दलित विमर्श, जाति व्यवस्था, अधिकार.

दलित साहित्य में शोषण चाहे मानसिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या धार्मिक उसके विरुद्ध विद्रोह होगा ही चाहे उसमें समय कितना भी लगे जैसे भारत में शताब्दियाँ बीत गई। धर्म के नाम पर एक वर्ग को सामाजिक, मानसिक और आर्थिक शोषण सहते हुए लेकिन जैसे ही इस दलित वर्ग में जरा सी चेतना आई उनके प्रति विद्रोह का विस्फोट हुआ।

दलित साहित्य दलित लेखकों द्वारा लिखित वह साहित्य है जो सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और मानसिक रूप से उत्पीड़ित लोगों की बेहतरी के लिए लिखा गया है। सवर्ण द्वारा दलितों को मानसिक, आर्थिक, धार्मिक के प्रति इतना गुमराह या शोषण किया गया है कि दलित वर्ग आज भी भ्रमित है। मनुष्य के मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव विभिन्न सामाजिक जीवन के प्रतिबिंबों की उपज

होती है जो सामाजिक चेतना से कला का और सामाजिक दायित्वों से कलाकार का संबंध विच्छेद करता है। भारतीय समाज व्यवस्था, जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सामाजिक दशा का गहन अध्ययन जरूरी है।''[1]

भारतीय हिंदू धर्म व्यवस्थाओं के अनुसार किसी भी देवता और सम्मान के लिए पुरुष के पैर भी स्पर्श किए जाते हैं फिर ऐसा कैसे हो गया कि ब्रह्मा के उन्हीं पूज्य पैरों से उत्पन्न शूद्र अस्पृश्य हो गया। लेकिन समाज का विकास या दुनियाँ के विकास का इतिहास गवाह है कि मनुष्य का चाहे संसार के किसी भी कोने में जन्म हुआ हो वह स्वयं उसे जन्म नहीं दे सकता। स्त्री के गर्भ से जन्म लेने का ही एक रास्ता है। वह भी अपने मुख, बाहु, उर और पैर से किसी शिशु को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए ब्रजसूची के यशस्वी रचनाकार अश्वघोष ने अपनी इस पुस्तक में एक ऐसा तिलमिला देने वाला प्रश्न किया है किः ''ब्राह्मण का जन्म ब्रह्मा के मुख से हुआ तो ब्राह्मणी का जन्म कहां से हुआ?''[2]

अर्थात् भारतीय हिंदू धर्म व्यवस्था में जन्म के अनुसार जैसे कुत्ता से कुत्ता, बिल्ली से बिल्ली, हाथी से हाथी पैदा होता है ठीक उसी प्रकार हिंदू धर्म व्यवस्था में नाई के घर में नाई, धोबी के घर में धोबी, कुम्हार के घर में कुम्हार, चमार के घर में चमार, लोहार के घर में लोहार पैदा होना था। लेकिन जब दलितों के मसीहा डॉ भीमराव अंबेडकर के द्वारा निर्मित संविधान 26 जनवरी 1950 में लागू हुआ तब मानवतावादी संवैधानिक व्यवस्था में नाई के घर में डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक चमार के घर में, धोबी के घर में प्रोफेसर, शिक्षक, इंजीनियर पैदा होने लगे और वह आज आगे की ओर बढ़ रहे हैं।

''दलितों का जीवन जहां सामाजिक उत्पीड़न, शोषण, दमन से भरा हुआ है, वही व्यवस्था के नाम पर आर्थिक विवशताओं और विसंगत पूर्ण स्थितियों ने दलितों के जीवन को नरक बनाया है। ग्रामीण परिवेश के जातीय उत्पीड़न से पलायन कर शहरों, महानगरों की ओर आने वाले दलितों के भीतर हीनता भाव इतना गहरा होता है कि उसे कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है।''[3]

लेखक ओमप्रकाश बाल्मीकि दलित साहित्य में सामाजिक चिंतन में आर्थिक स्थितियों के द्वारा दलितों को कितना श्रम, मजदूरी करना पड़ा कि उसका दर्द दलित ही जान सकता है। ग्रामीण जीवन में दलितों का जीवन अत्यंत दुखद रहता है। वह गांव के खेतिहर, मजदूर दलित ही रहता है। कम मूल्य में अधिक मेहनत करना यहां तक कि दलितों द्वारा सवर्णों के यहां, खेती करने से लेकर उनके यहां अनाज को अंदर रखना, गेहूँ धुलना, गेहूँ पिसाना, पानी भरना, गाय–भैंसों को दुहना आदि यह काम आम दलितों द्वारा ही संभव है और वह दलित अपने पूरी ईमानदारी के साथ सवर्णों के यहां काम करते हैं चाहे वह दलित लड़का हो, दलित महिला या वृद्ध दादा–दादी हो। वे सभी से चाहते हैं कि ये दलित वर्ग हमारे यहां गुलाम बन कर रहे। दलित समाज की आर्थिक स्थिति के कारण सवर्ण लोग आज भी शोषण कर रहे हैं और शोषण करना भी चाहते हैं।

मनुष्य की सामाजिक प्रतिबद्धता, बंधुता, समानता की भावना को डॉक्टर अंबेडकर ने सर्वोपरि माना है। भदंत आनंद कौसल्यायन डॉक्टर अंबेडकर के ग्रंथ ''भगवान बुद्ध और उनका धर्म'' की भूमिका नम्र निवेदन में लिखते हैं कि ''आदमी एक सामाजिक प्राणी है, मनुष्यतर प्राणियों के भी अपने–अपने समाज हैं किंतु पता नहीं जब हम किसी आदमी का धार्मिक रूप से अध्ययन करना चाहते हैं तो उसे क्यों इतना एकाकी मान बैठते हैं? हर आदमी में एक आत्मा मान ली जाती है और सब आदमियों के ऊपर एक परमात्मा मान लिया जाता है। आदमी जितना परमात्मा के समीप सरकता जाता है उतना ही अपने निकट संबंधियों से दूर होता चला जाता है।''[4]

दलित लेखकों द्वारा दलित चेतना के विषय में किया गया लेखनः

असत्यः दलित यायावर और आदिवासी के जीवन में सत्य का स्थान क्या है? मूलतः जिस सत्य पर गौरव किया जाता है ''सत्यमेव जयते'' कहा जाता है। क्या वह सत्य है? ब्राह्मण की ब्रह्मा के मुख से और शूद्र की ब्रह्मा के पैरों से उत्पत्ति हुई है। क्या यह सत्य है? गत जन्म में पाप किया इसलिए इस जन्म में शूद्र का जन्म मिला। क्या यह सत्य है?

अशिवः दलित साहित्य में हिंदू धर्म शास्त्र ने दलित मनुष्य के स्पर्श छाया और वाणी को अस्पृश्य माना है। अस्पृश्य के स्पर्श से अन्न, पानी और मनुष्य अस्पृश्य अपवित्र होता है।

असुंदरः दलित गाँव के बाहर रहे, उनके नाम अमंगल हो, वह संपत्ति जमा ना करें, वेदना पढ़ें, संस्कृत ना सीखें क्योंकि इससे दलितों को अपने शोषण की जानकारी होगी।

1. शंबूक ने तप किया, उसका वध कर दिया गया।
2. एकलव्य ने धनुष विद्या ली, उसका अंगूठा काट दिया गया।
3. छत्रपति शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक पर अधिकार जताया तो उन्हें शूद्र कहकर संबोधित किया गया।

''दलित साहित्य और मार्क्सवाद के संदर्भ में डॉक्टर अंबेडकर का जीवन और कार्य बहिष्कृतो के हित के लिए व्यतीत हुआ है। उन्होंने धर्म, अर्थ, साहित्य, राजनीति, समाजनीति, कानून और स्वतंत्रता अस्पृश्यों के हितों के संदर्भ में विचार किया और मार्क्सवाद का विचार करते समय अछूतों के हितों को नजर अंदाज नहीं किया। वे कहते हैं बाबा साहब को मार्क्सवाद अपूर्ण लगता है क्योंकि मार्क्सवाद में जाति अंत का विचार नहीं है।"[5]

परंतु दलित साहित्य में दलितों के हित में बाबा साहब ने जो अपने विचार प्रकट किए हैं वह धर्म के प्रति दलितों के हितों के लिए अपना जीवन व्यतीत किया है। अगर बाबा साहब ने धर्म, अर्थ साहित्य, राजनीति, सामाजिक कानून और स्वतंत्रता अस्पृश्यो के हितों के संदर्भ में विचार नहीं किया होता तो क्या दलित अपने विचार साहित्य में लिख पाता? क्या वह अपनी दुख पीड़ा को समझा पाते? इन संदर्भ विचार नहीं किए होते तो दलितों की वर्तमान स्थिति क्या होती? उनके बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता किसका वेश धारण करते? यह कोई नहीं जानता, लेकिन बाबा साहब ने अपने दलित समाज के दयनीय स्थिति को देखकर दलितों के प्रति विचार किया है कि भविष्य में दलित साहित्य को किन–किन चुनौतियों से जूझना पड़ सकता है।

भारत के तीन चेहरे हैं। "पहला हिंदुस्तान, दूसरा भारत और तीसरा इंडिया। इंडिया 21वीं सदी जा पहुंचा है तो दूसरी ओर मंगल ग्रहों की यात्राएं कर रहे हैं नए–नए अविष्कार हो रहे हैं लेकिन आज भारत का दलित कुएँ की जगत पर जाकर पानी पीने को तरस रहा है। वर्तमान की दुनियाँ संचार के माध्यमों के जरिए समीप आ रही है किंतु दलित लेखक इसी समस्या में उलझा हुआ है कि उसे 16 वीं सदी की समाज व्यवस्था से लड़ना है। धीरे–धीरे दलित साहित्य के प्रति आकर्षित हो रहे हैं, विशेष ध्यान देने की जरूरत यह है कि दलित साहित्य पूरे भारत का साहित्य है।"[6]

संसार का कोई भी धर्म व्यवस्था इस बात को स्वीकार करता है कि एक वर्ग दूसरे वर्ग की परछाई से डरे, एक वर्ग के व्यक्ति किसी दूसरे वर्ग के लोगों को स्पर्श करते हैं तो उसे अपवित्र मान लेते हैं। उनके आने–जाने के रास्ते अलग हो, जिनके भगवान और विश्वास अलग हो, जिनके मंदिर और पूजा स्थल अलग हो, तालाबों पर जहाँ जानवर कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, हाथी, गाय, भैंस आदि जानवर को पानी पीने की पूरी स्वतंत्रता हो और दलित मनुष्य को तालाब का, कुआं का, पानी पीने तक का अधिकार नहीं था। लेकिन मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि जब एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य नहीं समझ सकते तो कौन समझेगा? क्या जानवर समझेंगे? क्या जानवरों में जाति भेद करते हैं ? क्या धरती कभी भेदभाव करती है? क्या धूप, प्रकाश कभी भेदभाव किया है? यदि भेदभाव होता तो धरती पर दलितों के पैर पड़ने से मिट तो नहीं गई। जानवरों में तो जातियां होती है उन्हें देखकर मनुष्य भी कह सकता है कि अलग–अलग प्रजाति के जानवर और नाम भी हैं जैसे गाय भैंस, बकरी आदि सभी जानवर एक दूसरे के संबंध में रहते हैं लेकिन मानव क्यों नहीं रह सकता है?

निष्कर्ष

दलित साहित्य और सामाजिक चेतना से हमारा यह आशय है कि साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से अस्पृश्यों, दलितों, आर्थिक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक दृष्टि से शोषित वर्ग और भारतीय समाज में नारी जो अशिक्षा,रूढ़ीवाद और अंधविश्वास के कारण शोषण का शिकार बन रही हैं। ऐसे लोग पर हुए अधिकारों के प्रति

जागृत करना। उसके दर्द को, पीड़ा को, दुख, सुख आदि की समस्या को व्यक्त करना, साहित्य के अंतर्गत दलित या दलित चेतना के नाम से पुकारा जाता है।

साहित्य में दलित, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित मानव की असहाय दशा का चित्रण विविध रूप से किया जाता है जैसे कि अस्पृश्यता एवं वर्ण व्यवस्था का चित्रण निम्न वर्ग पर होने वाले अत्याचार एवं अन्याय का चित्रण, नारी की असहाय दशा का चित्रण, भिखारी समुदाय की दयनीय स्थिति का, दलित वर्ग की परिस्थिति में आते हुए परिवर्तन का चित्रण, अन्य समाज सुधारको द्वारा वर्ग के लिए किए गए कार्य का चित्रण, मानसिक रूप से उत्पीड़ित लोगों की बेहतरी के लिए, भारतीय समाज व्यवस्था, जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सामाजिक दशा का गहन अध्ययन करना जरूरी है और आदि विभिन्न स्वरूपों के माध्यम से दलित साहित्य और सामाजिक चेतना को व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची

1. सिंह, एन., *''दलित साहित्य''*, परंपरा और विन्यास संस्थान, गाजियाबाद, पृष्ठ 21।
2. सिंह, एन., *''दलित साहित्य''*, परंपरा और विन्यास संस्थान, गाजियाबाद, पृष्ठ 53।
3. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, *''दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र''*, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 76।
4. लिंबाले, शरण कुमार, *''दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र''*, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 32।
5. लिंबाले, शरण कुमार, *''दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र''*, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 69।
6. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, *''दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र''*, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 55।
7. अम्बेडकर, बी. आर., *''शूद्रो की खोज''*, सम्यक प्रकाशन, पृष्ठ 21,38,65,124।
8. अम्बेडकर, बी. आर., *''शूद्रो कौन और कैसे''*, सम्यक प्रकाशन, पृष्ठ 32–145।

****